भारतीय संस्कृति के आलोक में संस्कृत भाषा का महत्व

Scanned with CamScanner

भारतीय संस्कृति का स्रोत संस्कृत भाषा है। हमारी संस्कृति व सभ्यता वेदों, स्मृतियों एवं पुराणों से निकली है। हमारे सोलह संस्कार संस्कृत भाषा में ही कराये जाते हैं। संस्कृत मन्त्रों के साथ ही बालक के जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार होते हैं। भारतीय व्यक्तियों के नाम टाम, डिम, मेरी, जेम्स, चार्ल्स जैसे निरर्थक शब्दों के रूप में न होकर सदा सार्थक शब्दों में होते हैं। हम किसी को प्रणाम करते समय केवल प्रातः दोपहर, अपरान्ह, शाम या रात्रि (गुड मार्निंग, नून, आफ्टर नून, ईवनिंग, नाइट) के शुभ होने की ही बात नहीं करते, वरन् प्रातः दोपहर, रात्रि आदि के स्रष्टा को भी 'जय श्री रामजी', 'राम-राम', 'सीताराम' आदि शब्द कहकर स्मरण करते हैं। हम स्पष्ट रूप में अपने से बड़े के समक्ष पहुँचने पर नमस्कार या प्रणाम करते हैं जिसका अर्थ ही झुकना है, अर्थात् हम अपने से बड़े के गौरव के समक्ष अपना शीश झुकाते हैं। हमारे आशीर्वाद भी सार्थक हैं। 'आयुष्मान् भव, सौभाग्यशाली भव' आदि कहकर हम अभिवादन एवं आशीर्वाद दोनों को सफल कर देते हैं। हम अपने से बडे को उच्च आसन देते हैं। अतिथि सत्कार, सामान्य वार्तालाप आदि सभी में हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ शास्त्रीय आदेशों से नियन्त्रित हैं। भारतीय समाज में जीवन शास्त्रीय मर्यादाओं से नियन्त्रित है। आजकल किशोर प्रायः शिष्टाचार के नियमों की अवहेलना करते हुए दिखायी पड़ते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि वे संस्कृत भाषा से परिचित नहीं हैं। भाषा और संस्कृति का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। अंग्रेजी के जन्म स्थान इंग्लैण्ड की जलवायु बड़ी सर्द है, अतः वहाँ पर अतिथि का गरम स्वागत (वार्म वेल्कम) किया जाता है और उनके यहाँ शीत (कोल्ड) शब्द अनादर का द्योतक है। हमारे यहाँ की संस्कृति में शीतल जल से अतिथि का स्वागत किया जाता है। इस प्रकार की भिन्नता होने के कारण अंग्रेजी में हमारा जो चिन्तन चलता है, वह भारतीय संस्कृति के विपरीत पड जाता है।

Scanned with CamScanner

संस्कृत का सांस्कृतिक महत्त्व

भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत संस्कृत भाषा ही है, इसीलिए कहा गया है—"सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा:।"

हमारे परम्परागत संस्कार (जन्म से मृत्यु तक) आज भी संस्कृत भाषा के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आत्मा है। पूजा-पाठ, देवार्चन, यज्ञ-होम, आशीर्वचन (यथा—चिरंजीव भव आयुष्मती भव) अभिवादन, (नमस्ते, प्रणाम, नमस्कार,

Scanned with CamScanner

राधेश्याम, सीताराम) आदि सभी भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। संस्कृत साहित्य में हमारी समाज व्यवस्था को भी स्पष्टतः लिया गया है। वर्णाश्रम व्यवस्था, प्रजातन्त्रीय व्यवस्था आदि सभी भारतीय संस्कृति में निहित हैं। **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद** (स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति) के शब्दों में—"संस्कृत के मूलाधार आध्यात्मिक हैं, जो भारत को विश्व की अनूठी देन है।" डॉ० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा प्रतिपादित संस्कृत के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए भारत के भूतपूर्व प्रतिरक्षा मन्त्री बाबू जगजीवनराम ने संस्कृत को भारतीय संस्कृति की वाहिनी बताते हुए अपने अभिभाषण में स्पष्ट किया था कि—

"संस्कृत भाषा का देश की संस्कृति, धर्म और साहित्य से अटूट सम्बन्ध है। संस्कृत के बिना देश की संस्कृति और साहित्यिक भाषा का वैभव अर्थहीन-सा प्रतीत होता है। संस्कृत की शिक्षा का अपना विशेष महत्त्व है।"[1]

राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा सम्मेलन दिनांक 14 अक्टूबर, 1978 के उद्घाटन भाषण में भूतपूर्व उपराष्ट्रपति बासप्पा-दानप्पा जत्ती ने संस्कृत का महत्त्व बताते हुए कहा था कि—

"संस्कृत भारत में पुरातन विचारों की संवाहिका शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं की संरक्षिका है। संसार की प्राचीनतम भाषा होने के कारण उसका विश्व में विशिष्ट स्थान है। इसने भारत की भावात्मक एकता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।"[2]

ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी विवेकानन्द जी के शब्दों में—"हमारा अधिकांश साहित्य तथा हमारे सभी दर्शनशास्त्र संस्कृत भाषा में ही हैं। संस्कृत का प्रचार किये बिना भारतीय संस्कृति तथा भारतीय दर्शन को नहीं समझा जा सकता, इसीलिए संस्कृत भाषा की रचना करना और प्रसार करना बहुत ही आवश्यक कार्य है।"[3]

Scanned with CamScanner